१९: प्रतिपादन-१: आधार

दिनांक -१४/१०/२०११

यथार्थता, वास्तविकता, ज्ञान रुपी सत्यता का आधार में सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति को देखा गया है | इन तीनों मुद्दों का आधार होना पाया गया है | यही मध्यस्थ दर्शन सह-अस्तित्ववाद के रूप में प्रस्तुत है और यही सहअस्तित्व नित्य वर्तमान, प्रभावशील और प्रकटनशील देखा गया है | देखने का मतलब ज्ञानगोचर विधि से देखा गया है | इसे प्रमाण रूप में प्रस्तुत किया है, आचरण किया है, व्यवहार किया है | यह एक दूसरे के साथ स्वीकार होने, एक दूसरे के साथ समझने का प्रयास हो गया है | इसी आधार पर आगे प्रमाणित होने की आशा रखा गया है | मानव ही इसका धारक वाहक है | मानव इकाई को ज्ञानावस्था की इकाई के रूप में पहचाना गया है | ज्ञान, वास्तविकता, यथार्थता, सत्यता ही है | इन आधारों के होते मानव ज्ञानावस्था में प्रमाणित होना सम्भावना के रूप में स्वीकारा गया है तभी पूरी बात को वांगमय रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है | यह समूचा वांगमय ३६०० से ३८०० पृष्ठ के बीच है |

यह जागृत परम्परा होने की स्थिति में वांगमय का विस्तार कम हो सकता है | प्रमाणों का विस्तार बढ सकता है | जैसा अनुभव प्रमाण- समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व रूप में मानव में ही प्रमाणित होना देखा गया है | इसकी आवश्यकता को सभी आयु वर्ग के मानव स्वीकारते हैं | इसी आधार पर मानव ज्ञानावस्था में होना स्वीकार हुआ | ज्ञानावस्था के मानव को ही यथार्थता, सत्यता,वास्तविकता को प्रमाणित करना आवश्यक माना गया है | तभी प्रकाशन शुरू हुआ | प्रकाशन का सह-अस्तित्व ही एकमात्र स्रोत है | सहअस्तित्व ही नित्य प्रकटनशील है | इसी आधार पर प्रकट हो गया है | यद्यपि मानव आदिकाल से सच्चाई के प्यासे हैं | प्रयत्न भांति भांति विधि से घटित होता रहा है | मुख्य रूप से दो धारा में प्रयत्न हुई- एक आदर्शवादी विधि दूसरा भौतिकवादी विधि |

आदर्शवादी विधि से सभी प्रस्तावना आज्ञा के नाम से प्रस्तुत हुआ, जो रहस्यमय होने के कारण ईश्वरीयता के आधार पर सभी वांगमय प्रकारांतर से उपदेशात्मक हो गया है, फलस्वरूप अनेक मतभेद हुए | मतभेद से पलता हुआ मानव को आदर्शवाद अभी भी अच्छा लगने की स्थिति में है | अच्छा होने का भाग आदिकाल से अभी तक प्रश्नचिन्ह में ही है | जैसे यह प्रमाणित हुआ या नहीं यह तय नहीं हो पाया है | इसी कारणवश सहअस्तित्व नित्य प्रभावी होने के आधार पर सह- अस्तित्व रुपी वांगमय तैयार हुआ | यह सब क्रमागत विधि से ही है | आदि मानव जंगल में रहते हुए जीवों से जूझता रहा है | जीवों में से हिंसक जीवों से भी जूझता रहा है | इतिहास के अनुसार यह स्वीकारा जा सकता है | जीवों के साथ जीता हुआ मानव ईश्वरीयता के नाम से अपनी कल्पनाओं को दौड़ाया फलस्वरूप वांगमय बन गया, प्रमाण परम्परा स्थापित नहीं हुई | जैसा वेद विचार के अनुसार तीनों वेदों को श्रुति माना गया है |

श्रुति के मतलब में सुना हुआ, सुनाया गया माना जा सकता है | इस क्रम में मानव का रहस्य में फंसना एक बाध्यता रही | इस रास्ते में चलते निराश होना भी एक भाग रहा | निराशा के फलस्वरूप भौतिकवाद पनपा | भौतिकवाद में भी सुविधा- संग्रहात्मक प्रवृतियाँ पनपीं जिसमें सभी अपराधों को वैध माना गया | इस क्रम में मानव अपराधपूर्वक ही सुविधा- संग्रह

होने में अपना निष्ठा व्यक्त किया है | फलस्वरूप पूरी धरती पर मानव सुविधा संग्रह में प्रवर्तनशील होना आज की स्थिति में गण्य होता है | इसका गणना करने वाला भी मानव ही है | कोई भी इसका सर्वेक्षणपूर्वक गणना कर सकता है, निरीक्षण कर सकता है, परीक्षण कर सकता है | इसी क्रम में अर्थात सह-अस्तित्व नित्य प्रकटनशील होने के आधार पर साधना, समाधि, संयमपूर्वक अस्तित्व स्वयं सह-अस्तित्व होने, सह-अस्तित्व ही यथार्थता, सत्यता, वास्तविकता होने के स्वरूप को पहचाना गया है | इसे मानव सम्मुख प्रस्तुत किया गया है | यही विकल्पात्मक प्रस्तुति है | यह चेतना विकास मूल्य शिक्षा का पुरोधा है |

सर्वशुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याण हो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत